ऋचा सिंह
देवघर, झारखंड

दुआ

मेरी दिली तमन्ना है यही,
तू जहाँ रहे खुश रहे।
दूर ही सही पर तू,
सुखी संपन्न रहे।।

तुझ पर सिर्फ.....
सुख की वर्षा हो,
उन्नति तेरे कदम चूमे।
समृद्धि तेरे साथ हो,
तेरी जिंदगी खुशियों की सौगात हो।।

तेरे गम हो मेरे करीब,
मेरे सुख हो तेरे करीब।
ये इबादत करुँ मैं सरेआम,
तुझे खुदा की मर्सरत हो हासिल। ।

जिंदगी हो तेरी आबाद,
प्यार की हो बरसात।
ख्वाब पूरे हो तेरे सारे,
ये दुआ करुँ मैं , प्यारे।।

सही हूँ मैं

ऐसे मझधार में फंसी थी जिंदगी मेरी,
जैसे मेरा कोई वजूद ही न रहा।
दर्द भी ऐसा मिला,
जिसकी कोई उम्मीद न थी।।

अपना मान कर जिसने हाथ थामा,
उसी ने सर उठाकर जीने के,
काबिल भी न रहने दिया।
लोग इतने मतलबी कैसे हो जाते हैं,
किसी के जीवन से खिलवाड़ करते हैं।।

पूरी जिंदगी तबाह करने पर भी,
उनके चेहरे पर एक, शिकन भी न आती।
मेरे समझ से परे है ये सब,
लगता है एक पहेली ही बन गई हूँ मै,
खुद से ही अंजान हो गई हूँ मैं।।

आखिर ऐसा मेरे साथ ही क्यूँ.....?
जो जिंदगी जहन्नुम ही बना दी मेरी,
मेरा कसूर क्या था.....?
खुद से ज्यादा दूसरों की फिक्र करना,
या, गैरों पर भरोसा करना।
तभी याद आया शायद,
ये प्रभाव इस युग का है।।

अच्छे के साथ बुरा ही होता है,
यह कह दुखी मन को समझाया।
अपने जगह सही हूँ मैं,
अपने संस्कारों के साथ
ही तो खड़ी हूँ मैं।।